ISO 9001:2015 CERTIFIED COMPANY — Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. International Multilingual Research Journal

Vidyawarta®

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed Pin-431126 (Maharashtra)

Certificate Of Publication

This is to certify that the review board of our research journal accepted the research paper/article titled मिथिलेश्वर के कहानी साहित्य में वंचित एवं शोषितों का चित्रण of Dr./Mr./Miss/Mrs. Sandip Tanaji Kadam

It is peer reviewed and published in the Issue 55 Vol. 04 in the month of April to June 2025.

Thank you for sending your valuable writing for Vidyawarta Journal

Indexed (IIJIF) | Impact Factor 9.45 | Govt.of India, Trade Marks Registry Regd.No.2611690

ISSN-2319 9318

Editor in chief
Dr.Bapu G.Gholap

Note : The above certificate and accompanying research journal are protected by 3D hologram.

MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

6th ANNIVERSARY CELEBRATIONS
ANNIVERSARY
2018

Peer Reviewed Multilingual Refereed Journal

Vidya Warta®

April To June 2025
Issue 55, Vol-04

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

www.vidyawarta.com

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

April To June 2025
Issue 55, Vol-04

Date of Publication
01 April 2025

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. न्यायक्षेत्र:बीड

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat**.

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

INDEX

01) वंचितों के उद्धार की सार्थक अभिव्यक्ति: 'रश्मिरथी'
प्रो. (डॉ.) कामायनी गजानन सुर्वे ||10

02) जसिंता केरकेट्टा की कविताओं में चित्रित वंचित एवं शोषितों का जीवन
प्रो. (डॉ.) विनायक बापू कुरणे ||15

03) हिंदी आत्मकथाओं में चित्रित वंचित एवं शोषितों का जीवन समस्याएँ एवं समाधान
डॉ. भारत श्रीमंत खिलारे ||18

04) जगदीशचंद्र जी के उपन्यासों में चित्रित शोषितों का संघर्ष
प्रो. (डॉ.) सविता शिवलिंग मेनकुदळे ||25

05) वर्तमान कहानी साहित्य में वंचितों का संघर्ष: विविध आयाम
डॉ. शोभा एम. पवार ||29

06) 'कोर्टमार्शल' नाटक के रामचंदर का संघर्ष
प्रा. डॉ. दिलीपकुमार कसबे ||31

07) 'यह अंत नहीं' उपन्यास में शोषित एवं वंचित जीवन
डॉ. संदीप जोतिराम किर्दत ||34

08) २१ वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में चित्रित किन्नर मन का आक्रोश
डॉ. अशोक मोहन मरळे ||39

09) शिकंजे के दर्द से गुजरते हुए..
डॉ. वैशाली खेडकर ||43

10) आम आदमी के शोषण की पीडा से साक्षात्कार –'बकरी' नाटक
प्रो. (डॉ.) नितीन धवडे ||46

11) २१वीं सदी के नाटक में शोषित किसान जीवन की त्रासदी
डॉ. सचिन मदन जाधव ||49

12) मिथिलेश्वर के कहानी साहित्य में वंचित एवं शोषितों का चित्रण
प्रा. डॉ. संदीप तानाजी कदम ||54

www.vidyawarta.com/03 http://www.printingarea.blogspot.com

12

'मिथिलेश्वर के कहानी साहित्य में वंचित एवं शोषितों का चित्रण'

प्रा.डॉ.संदिप तानाजी कदम
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
श्री आर.आर.पाटिल महाविद्यालय, सावलज
तहसील—तासगांव, जिला—सांगली

****

शोधालेख का सार —

प्रस्तुत शोधालेख में मिथिलेश्वर के साहित्य में वंचित एवं शोषित पात्रों के विविध आयामों पर चिंतन हुआ है। आधुनिक भारतीय हिंदी साहित्य जगत में मिथिलेश्वर का नाम प्रतिष्ठित रचनाकार के रूप में लिया जाता है। वे ग्रामीण कथाकार के रूप में विख्यात है। उन्होंने कहानी और उपन्यास विधा में अपनी अलग छाप छोड़ दी है। उन्होंने कथा साहित्य घ्दारा ग्राम—जीवन के सभी बुनियादी समस्याओं की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया है। वे १९७० से ही हिंदी कहानी लेखन के क्षेत्र में कारगर रूप से सक्रिय कथाकार रहे है। उन्होंने गाँवों में बसे लोगों की पीड़ा को बहुत करीब से देखा और भोगा है। गाँव की समस्याओं और वहाँ के नये वर्ग संघर्ष को अपनी कहानियों के माध्यम से अभिव्यक्ति दी है। साथ ही उन्होंने अपनी कहानियों में वंचित एवं शोषित जीवन से जुड़ी हर एक बात को अपने साहित्य में विभिन्न पात्रों के माध्यम से चित्रित किया है। पात्रों के दुःख—दर्द, वेदना, पीड़ा, घुटन के साथ—साथ अन्याय—अत्याचार, शोषण, उत्पीड़न के प्रति विद्रोह एवं उपेक्षित जीवन का चित्रण हुआ है।

मूल शब्द —अन्याय—अत्याचार, अमीर—गरीब, जातिव्यवस्था, भेदभाव, वंचित, शोषित

अपने विशिष्ट कथा—लेखन से भारतीय जनमानस को प्रभावित करनेवाले कथाकार मिथिलेश्वर अपने पाठकों के बीच लोकप्रिय है। उनका जन्म ३१ दिसम्बर १९५० को बिहार राज्य के भोजपुर जिले के बैसाडीह गाँव में हुआ था। उनका लालन—पालन एक मध्यमवर्गीय कायस्थ परिवार में सामान्य रूप में हुआ है। उनके पिताजी का नाम वंशरोपनलाल और माताजी का नाम कमलावती देवी है। मिथिलेश्वर के परिवार में प्राय: सभी व्यक्ति शिक्षित एवं उच्च शिक्षा प्राप्त है। उन्होंने अपने लेखन की शुरुआत काव्य से न करके गदय से की है। उनकी प्रथम कहानी 'अनुभवहीन' है जो मई १९७३ को 'सारिका' के नवलेखन विशेषांक में प्रकाशित हुई थी। इसके बाद वे जीवनभर साहित्य से जुड़े रहे। उनकी अब तक कुल ३५ किताबें प्रकाशित हुई है, जिसमें ११ कहानी—संग्रह, ०७ उपन्यास, १० कहानी संकलन, ०१ निबंध—संग्रह, ०२ नवसाक्षरोपयोगी कथा—पुस्तक, ०३ आत्मकथा एवं ०१ पुस्तक में भोजपुरी लोककथा का समावेश किया गया है। इसके अलावा उन्होंने 'मित्र' नामक साहित्यिक पत्रिका का संपादन भी किया है।

कहानीकार मिथिलेश्वर का वास्तविक नाम मिथिलेश्वर ही है। लेकिन उन्हें बचपन में 'मिथि' के नाम से पुकारा जाता था। वे मध्यमवर्गीय कायस्थ परिवार से होने के कारण मध्यमवर्गीय जीवन के खोखलेपन और आड़म्बर से भलीभाँति परिचित थे। अपने गाँव की विशेषता का जिक्र उन्होंने स्वयं एक स्थान पर किया है— ''मैं आपको बता दूँ, मेरा जन्म भोजपुर जिले के एक ऐसे इलाके में हुआ है जो चोरी—डकैती, लूटपाट, मनमानी और ज्यादती को लेकर पूरे जिले में मशहूर है। उस इलाके में कोई भी बात जो पहले लाठी के सहारे तय की जाती थी, अब बन्दूक की नोक पर तय की जाती है। पता नहीं क्यों, बचपन से ही अपने इलाके के अत्याचार—अनाचार, जुल्म—सितम, शोषण—अन्याय को मैं सह नहीं पाता था।''१ गाँव में होनेवाली अन्याय—अत्याचार की घटनाओं का प्रतिरोध शारीरिक रूप से न कर पाने के कारण मिथिलेश्वर लेखन की ओर अग्रसर हुए। उनके द्ध्वारा लिखित कहानियों की बात करे तो पता चलता है उन्होंने अब तक कुल मिलाकर ११० से अधिक कहानियाँ लिखी हैं। इन्हीं कहानियों को बाबूजी, बन्द रास्तों के बीच, दूसरा महाभारत, मेघना का निर्णय,

तिरिया जनम, हरिहर काका, एक में अनेक, एक थे प्रो.बी.लाल, भोर होने से पहले, जमुनी एवं चल खुसरो घर अपने आदि कहानी संग्रहों में संकलित किया गया है।

मिथिलेश्वर के कहानी–संग्रहों की कहानियों में ग्रामीण सामाजिक जीवन की परिपूर्ण अभिव्यक्ति हुई है। अपनी कहानियों में गाँवों की स्थितियों का चित्रण करते समय उन्होंने शहरी जीवन का भी सहारा लिया है। क्योंकि नौकरी के लिए तो वे शहर में जरूर चले गए, लेकिन उनका मन गाँव में ही बसा है। क्योंकि उन्हें मालूम है गाँव के लोगों को जीवन जीने के लिए कितनी समस्याओं और संघर्षों का सामना करना पड़ता है। इसी का चित्रण वे अपनी कहानियों में अधिक मात्रा में करते है। इतना ही नहीं उनके कहानियों में चित्रित विभिन पात्रों के वंचित एवं शोषित जीवन का भी चित्रण निम्नरूप से देखने को मिलता है। जैसे– अपने देश के अनेक गाँवों में बड़े जमींदार, मिल मालिक, कारखानदार मजदूरों का शोषण करते हुए दिखाई देते है। गाँव के लोग अकाल, भूखमरी आदि समस्याओं के कारण उनको जो भी काम मिलता है वह करके अपना उदरनिर्वाह करने की कोशिश करते हैं। लेकिन जमींदार लोग इनकी मजबूरी का फायदा उठाते है। काम समय पर न करने के कारण 'एक और हत्या' कहानी में हरपालसिंह अपने नौकर जगेसर को बहुत गालियाँ देता है– "साले, तुम्हें पच्चीस रुपये महीना लत्ता–कपड़ा और खाना इसलिए देता हूँ? यह तुम्हारी आज की आदत नहीं, बल्कि रोज की है। एक तो तुम लेट बाजार जाते हों, दूसरे आते भी लेट। ... तुम्हारी सबकी हेकड़ी अब जल्द ही खत्म करूँगा।"२ इस तरह थोडीसी भी गलती होने या कभी न होने पर भी मालिक मजदूरों पर गुस्सा निकालकर उनका शोषण करते रहते है। यही बात हमें 'मेघना का निर्णय' कहानी में भी दिखाई देती है। कहानी में मजदूरों के शोषण तथा शोषण के खिलाफ उठाई गई बुलन्द आवाज का चित्रण है। कहानी का नायक मेघना गाँव से शहर जाकर मजदूरी करना शुरु करता है। धीरे–धीरे वह शोषणकर्ता ठेकेदारों से परिचित होता है और वह उनके विरुध्द खड़ा हो जाता है। कम मजदूरी देनेवाले रेलबाबू से वह टकरा जाता है। मेघना अपने साथियों के साथ रेलबाबू के घर पैसे माँगने जाता है तब रेलबाबू उनपर बंदूक की गोलियाँ चलाते है। बाद में रेलबाबू गाँव के संपन्न लोगों से मिलकर मजदूरों की आवाज घोट देता है। मेघना जब अपने मजदूर मित्रों के सहारे बाबू लोगों से लड़ने का निर्णय कर लेता है, तब मजदूर मित्र उसका सहारा नहीं दे पाते हैं। इसपर मेघना सोचता है बाबू लोगों को हमारे जीने का हक छीनने का क्या अधिकार है? इस सोच में जब वह खो जाता है, तब पत्नी मेघना को समझाते हुए कहती है, "गाँव बाबू लोगों का है। वे गाँव के मालिक है। अगर तुम्हें डाँट फटकार और गाली ही दे दी तो क्या हुआ? वे बड़े लोग है। पुश्तों से इस गाँव पर उनका शासन चला आ रहा है। उनसे टकराने की बात मत सोचो पानी में रहकर मगर से बैर ठीक नहीं होगा।"३ मेघना की पत्नी के इस कथन से हमें पता चलता है आज भी गाँवों में मजदूरों के ऊपर बाबू लोगों का अधिकार रहता है।

मजदूर समाज का वह वर्ग है, जो दिन–रात अथक परिश्रम करके अपना उदरनिर्वाह करता है। ऐसे मजदूर वर्ग का शोषण किया जाता है। यहाँ तक उनके साथ मारपीट भी की जाती है। 'भोर होने से पहले' कहानी में पिता के मृत्यू के बाद बैजू को चरवाही के काम पर झोक दिया जाता है। छोटी उम्र में उसपर बड़े कार्यों का भार सौंपा जाता है। इन कार्यों से थककर और ऊबकर एक दिन वह भाग जाना चाहता है, पर गाँव के छोकरे उसे बस स्टैंड से धर दबोच लाते है। घर लाकर उसे पीटा जाता है और डाँट भी लगायी जाती है। तब बैजू चुपचाप अन्याय को सहता रहता है। 'हरिहर काका' कहानी के हरिहर काका अहिंसा के मार्ग पर चलनेवाले व्यक्ति थे। जो निःसंतान है। दो पत्नियों के मृत्यू के बाद उन्होंने शादी नहीं की। लेकिन उन्हें मिले १५ बीघा खेत को ठाकुरबारी के महन्त और उनके भाई हड़पना चाहते है। काका के विरोध करने पर वे लोग हिंसात्मक प्रवृत्ति पर उतर आते है। ठाकुरबारी के महन्त जायदाद के लिए काका के हाथ–पाँव बाँध देते हैं, उनके मुँह में कपड़ा ठूँसकर एक कमरे में उन्हें बंद कर देते है। भाई भी उनके

सामने हथियार लेकर खड़े होकर कहते है, ''सीधे मन से कागजों पर जहाँ–जहाँ भी जरूरत है, अंगूठे के निशान बनाते चलो अन्यथा मारकर यहीं घर के अन्दर गाड़ देंगे। गाँव को कोई सूचना तक नहीं मिल पायेगी।''४ इतना ही नहीं घर के लोग भी काका को झूठा और बाँसा खाना खिलाकर उनका शोषण करते है।

'बहादुर' कहानी में मालिक और मालकिण बहादुर को कुत्ते से भी कम किमत देकर उसके साथ अन्याय करते है। मालकिण तो बहादुर जैसे पुरुष को अपनी आब और चोली फिंचने को कहती है, तो मालिक अपने पालतू कुत्ते को खाना खिलाने के बाद बहादुर को खाना देते हैं। 'एक में अनेक' कहानी में भी माथुर साहब अपने नौकर से चौबिसों घंटों काम करवाता है। लेकिन उसके खाने–पीने तथा सोने की कोई व्यवस्था न करके उसका शोषण करवाते है। 'देर तक' कहानी में रमुआ के शोषण एवं यातनाओं का चित्रण है। रमुआ के बाप ने महेंद्र सिंह की धैर्यपूर्वक सेवा करके उसके लिए चपरासी की नौकरी दिलवाई और समझा कर शहर भेजा कि ईमानदारी से काम करना, नौकरी छूटने न पाए। चपरासी तो वह नाममात्र को है। उसे दिन–रात महेंद्र सिंह के यहाँ गुलामी करनी पड़ती है। महेंद्र सिंह की पत्नी बीमारी में भी उसे आराम नहीं करने देती। वह अन्याय–अत्याचारों से तंग आकर गाँव वापस जाना चाहता है, लेकिन बाप के दुःख के कारण नहीं जा पाता है।

भारतीय समाज परम्परागत विचारों का पोषक समाज है। समाज आज भी परम्परागत विचारों का दामन थामे हुए है। इसके परिणामस्वरूप समाज के आगे नारी को घुटने टेकने पड़ते हैं। क्योंकि पुरुष प्रधान समाज में सदियों से नारी शोषण एवं उत्पीड़न का शिकार होती रही है। कभी वह समाज से उत्पीड़ित हुई है तो कभी समाज के वहशी दरिन्दों ने उसका शोषण किया है। 'वैतरणी भौजी' पुरुष के अत्याचारों से पिसनेवाली नारी की व्यथा का भार ढोने वाली कहानी है। पति–परित्यक्ता एक गर्भवती नारी गाँव के सिवान पर रोती हुई पाई जाती है। वह नैहर जाना नहीं चाहती। वह लोगों के यहाँ कुटावन–पिसावन और चौका बर्तन करके गुजर–बसर करने के लिए तैयार है लेकिन गाँव के परम्परागत लोगों की धारणा के अनुसार– ''कोई औरत स्वतंत्र होकर जी ही नहीं सकती। बचपन उसे पिता के अधीन, जवानी में पति के अधीन तथा बुढ़ापे, में पुत्र के अधीन जीना होता है। यही सनातन परम्परा है। वह औरत परम्परा के विरुद्ध जीना चाहती थी, इसीलिए समस्या यह खड़ी हो गयी थी कि गाँव में वह रहेगी किसके यहाँ?''५, गाँव के बदनाम व्यक्ति जगराम ने उसे शरण दी और बाद में वह गाँव के नारी–भक्षी पुरुषों की वासना का शिकार होने लगी।

'शरीर से लाश तक' कहानी में जिलेबी बेचनेवाली एक गरीब हलवाई की लड़की के साथ हुए शोषण का वर्णन मिलता है। लडकी अपनी माता–पिता के वृध्द होने के कारण तथा भाई का दुर्घटना का शिकार होने पर गाँव–गाँव जाकर जिलेबी बाँटने का काम करती है। लेकिन समाज उसे इज्जत और मान–सम्मान से जीने न देकर उसकी मजबूरी का फायदा उठाना चाहता है। गाँव के लोग उससे छेड़खानी करने, उसे धकियाने तथा कहीं भी बेझिझक कुछ कह देने में शरमाते और डरते नहीं है। एक दिन तो उसे बोरिंगवाला आदमी घसीटकर कोठरी के भीतर ले जाता है। वह न चाहते हुए उसके हवस का शिकार होकर अचेत पड़ जाती है। 'नरेश बहू' कहानी का कथ्य भी नारी जीवन के उत्पीड़न एवं शोषण से सम्बन्धित है। नरेश बहू शादी के बाद पति और सास के अत्याचार से तंग आकर ससुराल से भाग जाती है। दूसरे गाँव का साहसी युवक बीरु उसकी रक्षा करता है। पर एक दिन रामबुझावन सिंह का लड़का सुरेन्दर नरेश बहू के आबरू पर हाथ डाल देता है। यह घटना जब पूरे गाँव में फैल जाती है तब सुरेन्दर नरेश बहू को गाँव से भगाने का प्रयास करता है। इतना ही नही बल्कि नरेश बहू की रक्षा करनेवाले बीरु को कामुक मनचलों ने खत्म करके ही संतोष की साँस ली।

मिथिलेश्वर की कुछ कहानियों में शोषण के साथ वंचित जीवन का भी चित्रण मिलता है। जैसे– 'पत्थर की लकीर' कहानी के बाबा हरिदयाल उनके ही गाँव की एक अछूत कन्या से विवाह कर गाँव में क्रांति की पहल करते है। क्योंकि आज तक गाँव में कभी किसी ने ऐसा काम नहीं किया था। जिसके

कारण घरवालों ने उन्हें घर से बाहर कर दिया था। तब बाबा अपनी अछूत पत्नी को लेकर जंगल में कुटिया बनाकर रहते है। कुछ दिनों के बाद उन्हें पुत्रप्राप्ति होती है। उसी समय बाढ़ आती है। तब उन्हें कोई भी सहायता करने नहीं आता है।

निष्कर्ष–

अत: कहा जा सकता है कि विशिष्ट प्रतिभा के धनी मिथिलेश्वर का ग्रामीण कथाकारों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान रहा है। ग्रामीण जीवन के यथार्थ की गहरी अनुभूति के आधार पर लिखी गई उनकी कहानियों ने पाठकों को झकझोर दिया है। इतना ही नहीं उन्होंने अपनी कहानियों के पात्रों के माध्यम से मनुष्य जीवन के संघर्ष, त्रासदी, उत्पीड़न, शोषण एवं वंचित जीवन को अभिव्यक्त किया है। प्रस्तुत शोधालेख में 'एक और हत्या' कहानी का जंगसर, 'मेघना का निर्णय' कहानी का मेघना, 'भोर होने से पहले' कहानी का बैजू, 'हरिहर काका' कहानी के हरिहर काका, 'बहादुर' कहानी का बहादुर, 'दिर तक' कहानी का रमुआ, 'बैतरणी भौजी' कहानी की बैतरणी भौजी, 'शरीर से लाश तक' कहानी की एक जिलेबी बेचनेवाली लड़की, 'नेरुआ बहू' कहानी की नेरुआ बहू एवं 'पत्थर की लकीर' कहानी के हरियाल बाबा और उनकी अछूत पत्नी आदि के वंचित एवं शोषित जीवन का चित्रण दिखायी देता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

१. मिथिलेश्वर, बन्द रास्तों के बीच, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. सं. १९७८, पृ.१०
२. मिथिलेश्वर, बाबूजी, विक्रांत प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. सं. १९७६, पृ.२२
३. मिथिलेश्वर, मेघना का निर्णय, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, द्वि सं. १९८८, पृ. १–२
४. मिथिलेश्वर, एक और मृत्युंजय, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र.सं. १९९४, पृ. १८४
५. मिथिलेश्वर, भोर होने से पहले, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र. सं. १९९४, पृ.५७

ꕤꕤꕤ

13

हिंदी का दलित नाटक : एक अध्ययन

डॉ. आनंद गुलाबराव खरात
कर्म. आ. मा. पाटील कला, वाणिज्य एवं
के.अण्णासाहेब एन. के. पाटील साइन्स महाविद्यालय,
पिंपळनेर, तह. साक्री, जिला, धुलिया।

सारांश:

यह शोध पत्र हिंदी साहित्य में दलित नाटक के उदय, विकास और प्रमुख विशेषताओं का विश्लेषण करता है। दलित नाटक ने हिंदी रंगमंच को नई ऊर्जा और दिशा प्रदान की है। इसने सामाजिक असमानता, शोषण और उत्पीड़न के मुद्दों को केंद्र में रखते हुए समाज के दबे–कुचले वर्गों की आवाज को मंच पर उठाया है। इस शोध पत्र में दलित नाटक के प्रमुख लेखकों, उनकी रचनाओं और उनके सामाजिक–सांस्कृतिक प्रभावों का विस्तार से अध्ययन किया गया है।

हिंदी साहित्य में दलित साहित्य एक महत्वपूर्ण धारा है। इस धारा के अंतर्गत दलित लेखकों ने अपनी पीड़ा, शोषण, उत्पीड़न, अत्याचारों की साहित्यिक अभिव्यक्ति दी है। दलित नाटक भी इसी धारा का एक अंग है। दलित नाटककारों ने मंच पर दलितों की वास्तविक जीवन की कहानियों को उठाया है। उन्होंने समाज में व्याप्त जातिवाद, छुआछूत, अस्पृश्यता जैसी कुरीतियों का पर्दाफाश किया है। उन्होंने दलितों के अधिकारों, समानता और सम्मान की मांग को जोरदार ढंग से उठाया है।

१. परिचय:

हिंदी साहित्य में नाटक एक महत्वपूर्ण विधा है। परंपरागत रूप से, हिंदी नाटक में ब्राह्मणवादी दृष्टिकोण और उच्च वर्गीय अनुभवों का वर्चस्व रहा